



॥ श्री यमदेव चालीसा ॥
॥ ॐ यमाय नमः ॥

FULL DISCLAIMER

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS
AT YOUR DOOR"

॥ श्री यमदेव चालीसा ॥

॥ दोहा ॥

श्री गणपति गुरु चरण वंदि, करूँ विनय मन लाय।
यमदेव की महिमा कहूँ, हरहु सकल भय जाय॥
सूर्यपुत्र प्रभु धर्मराज, न्याय करो निष्पक्ष।
भक्त जनों पर कृपा करो, हरो सकल संताप॥

॥ चौपाई ॥

जय यमराज धर्म अवतारा।
सूर्यतनय जग पालनहारा॥
दण्डधर कर न्याय विचारा।
कर्म अनुसार दियो फल सारा॥
चित्रगुप्त संग लेखा धारी।
जग के कर्म करें रखवाली॥
सत्य धर्म के तुम अधिकारी।
भक्तन हित करुणा विस्तारी॥
महिष वाहन शोभा भारी।
मुकुट किरीट छवि अति प्यारी॥
श्यामल तन गंभीर सुहावन।
तेज पुंज सब भय नसावन॥
पाप-पुण्य का लेखा जाना।
न्याय बिना न दंड ठिकाना॥
राजा रंक सम दृष्टि धारी।
सब पर एक समान तुम्हारी॥
धर्म मार्ग जो नर अपनावे।
यम भय तासु निकट न आवे॥
सत्य वचन जो जीवन धारे।
सुख शांति के फल वह पावे॥

लोभ मोह मद त्यागे प्रानी।
तुम पर हो कृपा भवानी॥
दीन दुखी पर दया दिखावो।
भटके जन को राह बतावो॥
अधर्मी को उचित सुधारा।
धर्मी का तुम बने सहारा॥
भक्त पुकारे नाम तुम्हारा।
दूर करो संकट संसारा॥
अकाल मृत्यु दोष मिटावो।
सद्बुद्धि का दीप जलावो॥
धर्म कर्म में मन लगवाओ।
सत्पथ पर सबको चलवाओ॥
क्रोध कपट अभिमान हटाओ।
प्रेम भक्ति का भाव बढ़ाओ॥
सदाचार का पाठ पढ़ाओ।
जीवन सफल सदा बनवाओ॥
जो जन नित यह पाठ सुनावे।
धर्म मार्ग पर दृढ़ हो जावे॥
भय रोग दोष सभी मिट जावें।
सुख समृद्धि घर-घर आवें॥
पितरों का आशीष दिलावो।
सद्गति का शुभ मार्ग बतावो॥
भक्ति भाव जो हृदय बसावे।
यम कृपा सहज ही वह पावे॥
अंत समय जब प्राण निकरहीं।
नाम तुम्हार हृदय में धरहीं॥
तब तुम दया दृष्टि बरसावो।
मोक्ष धाम का पंथ बतावो॥

॥ दोहा ॥

धर्मराज प्रभु यम कृपालु, राखो अपनी लाज।
भक्ति, सत्य, सद्कर्म दे, पूर्ण करो सब काज॥